International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 20-24

असमीया साहित्य के रोमान्टिक युग के कवि लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और उनकी कविता: एक अध्ययन

(रोमान्टिक भावधारा के विशेष सन्दर्भ में)

जयन्त कुमार बोरो

असिस्टेन्ट प्रोफेसरए हिन्दी विभाग कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेजए कोकराझारए असम

सरांश

'लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा' को असमीया साहित्य में एक रोमान्टिक कवि के रुप में स्मरण किया जाता है। असमीया साहित्य के 'रोमान्टिक काव्य आन्दोलन' एवं 'जोनाकी युग'[1] के त्रिमूर्ति कवियों में लक्ष्मीaनाथ बेजबरुवा एक अन्यतम कवि है। बेजबरुवा जी का प्रथम काव्य संकलन 'कदमकलि' के नाम से सन् 1913 ई. में प्रकाशित' हुआ। बाद में इधर- उधर की पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं को संकलित कर 'पदुमकलि' के नाम से एक कविता संकलन तैयार किया गया। बेजबरुवा ने लगभग एक सो बीस तक की संख्याओं में कविताओं की रचना की है। बेजबरुवा की कविताओं में प्रेम- प्रीति, आध्यात्मिक भाव, जातीयता का भाव एवं व्यंग्य आदि विशेषताएँ देखने को मिलती है। इन विशेषताओं को केन्द्र में करके उनकी कविताओं को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है- 1. प्रेम- प्रीति पर आधारित कविता, 2. जातीयता भाव- बोध की कविता, 3. नीति एवं धर्म विषयक कविता, 4. व्यंग्य कविता आदि। इनमें से प्रथम दो विशेषताओं पर आधारित कविताओं के प्रणयन में उन्होंने अधिक सफलता प्राप्त की हैं। रोमान्टिस्जिम काव्य को असमीया साहित्य जगत में लाने का श्रेय लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा को विशेष रुप से जाता है। प्रस्तुत आलेख में उनकी कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम- प्रीति और जातीयता भाव- बोध को विशेष रुप से उजागर एवं अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

कूट शब्द– रोमान्टिस्जिम, जोनाकी युग, प्रेम-प्रीति, जातीय भावबोध आदि।

प्रस्तावना

असमीया साहित्य के इतिहास में सन् 1889 ई. से सन् 1940 ई. तक के कालखण्ड को 'रोमान्टिक युग' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। असमीया साहित्य में *रोमान्टिक* शब्द कविता के एक विशेष काव्यधारा के लिए प्रयोग किया जाता है। यह विशेषण असमीया साहित्य में अपने स्वरुप को विस्तार कर रहा था। यह तो स्पष्ट हो गया है कि जोनाकी पत्रिका के माध्यम से असमीया साहित्य में रोमान्टिक युग का सुत्रपात होता है। असमीया रोमामंटिक युग का प्रारम्भ सन् 1889 में प्रकाशित *'जोनकी'* पत्रिका से साधारणतः माना जाता है। रोमान्टिक युग को असमीया साहित्य में एक साहित्यिक आन्दोलन के रुप में देखा गया। असम में इस युग को 'नवजागरण' की संज्ञा से भी अभिहित किया गया। इस आन्दोलन का श्रीगणेश 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी सभा' से होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक में कलकत्ता में अध्ययनरत असमीया छात्रों ने इस सभा को जन्म दिया। प्रारम्भ में यह सभा उन छात्रों के मेल मिलाप करने के लिए प्रति शनिवार को आयोजित होने वाली एक साधारण सभा थी। जिसमें कलकत्ता में आये हुये असम के सभी विद्यार्थी एक साथ सम्मिलित होकर मेल-मिलाप करते थे। उन छात्रों ने बाद में इसमें कुछ बदलाव लाया और इसे सप्ताह में दो दिन आयोजित करने लगे। 25 अगस्त, सन् 1888 में कलकत्ता में शहर के मध्य 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी सभा' के नाम से एक विख्यात युगान्तकारी सभा का निर्माण किया। सभा के कम से कम बीस छात्रों के एक दल ने असमीया साहित्य में नवजागरण का चादर फैलाया। *'चन्द्रकुमार अगरवाला', 'हेमचन्द्र गोस्वामी' और 'लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा'* इस दल के तीन प्रधान छात्र थे। इन तीनों छात्रों के अथक प्रयासों से ही सन् 1889 के जनवरी महीने में *'जोनाकी'* नामक असमीया पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस युगान्तकारी पत्रिका का प्रथम सम्पादक *चन्द्रकुमार अगरवाला* थे। रोमान्टिक साहित्य मूलतः कविता पर आधारित है। कविता पक्ष ही इस धारा के पक्ष में थी। इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि इस युग में साहित्य की ओर विधाओं में जैसे लघुकथा, उपन्यास, नाटक आदि में इसका प्रभाव नहीं पड़ा। रोमान्टिक साहित्य की क्रिया और प्रतिक्रिया कमोवेश साहित्य का लगभग सभी विधाओं में परिलक्षित होता है। किन्तु कविता के क्षेत्र में इसका सफल रुप अधिक दिखाई पड़ता है। असमीया साहित्य की ओर विधाओं पर लेखन का कार्य और आधुनिक कला कौशल रोमान्टिक युग से ही प्रारम्भ होता है। इस युग के पूर्व असमीया साहित्य में मध्य युग का समय रहा, जिसके केन्द्र में वैष्णव धर्म था। परवर्ती असमीया साहित्य में एक और युग परिलक्षित होता है जिसे *'अरुणोदय युग'* के नाम से जाना जाता है। इस युग ने ईसाई धर्म का प्रचार रुपी पथ को छोड़कर प्रकृत अर्थ में एक धर्म-निरपेक्ष परम्परा को स्थापित करने का प्रयास किया। रोमान्टिक युग ने असमीया साहित्य को एक नवीन पथ प्रदर्शन किया।

उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य के माध्यम से यह स्पष्ट करना है कि असमीया साहित्य में रोमान्टिक काव्यधारा की एक लम्बी अवधि रही है। लगभग पचास वर्ष (1889-1940) की एक लम्बी अवधि को असमीया साहित्य जगत में रोमान्टिक युग के नाम से जाना गया। यानि की पाँच दशकों तक रोमान्टिक कविता धारा को असमीया काव्य में देखने को मिलता रहा हैं। हिन्दी साहित्य में रोमान्टिक युग का सन् 1920 ई. से सन् 1936 ई. के कालावधि को माना गया। असमीया रोमान्टिक काव्य धारा में त्रिमूर्ति कवियों (चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा) का एक सुमधुर संगम है। इस युग में 'जोनाकी', 'बाँही' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। ठीक इसी भाँति हिन्दी साहित्य के रोमांटिक युग में चार कवियों *जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* आदि का आविर्भाव हुआ। जिसे हिन्दी छायावाद के चार स्तम्भ

भी कहाँ जाता है। असमीया साहित्य के रोमान्टिक काव्यों को हिन्दी के साथ जोड़कर देखा जाए मणिकांचन योग बनता। अतः अभिप्राय यही है कि असमीया रोमान्टिक काव्य अपने आप में विशिष्ट है। इसका अध्ययन आज भी अपेक्षित है।

शोध विधि

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्री

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। असमीया साहित्य के विविध ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मद्द मिली है। बेजबरुवा जी की ग्रंथावली से विशेष रुप आलेख को पुरा करने में सहायता मिली।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी ने बृहद मात्रा में साहित्य का प्रणयन किया है। इन्हें असमीया साहित्य में 'रसराज' भी कहाँ जाता है। इनकी साहित्यिक रचनाओं में कविता, कहानी, नाटक , उपन्यास, आत्मकथा आदि साहित्य की विविध विधाये देखने को मिलती हैं। बेजबरुवा जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। बेजबरुवा जी की साहित्यिक प्रतिभा उनके कृतियों में स्पष्ट झलकता है। उनके द्वारा रचित साहित्यिक रचनायें इस प्रकार से हैः-

कविताः- 'कदमकलि' (1913 ई.), और 'पदुमकलि'। पदुमकलि कवि के पश्चात् संकलित काव्य ग्रन्थ है।

कहानीः- 'सुरभि' (1909 ई.), 'साधुकथार कुँरि' (1910 ई.), 'बुढ़ी आइर साधु' (1912 ई.), 'जोनबिरि' (1913 ई.), 'बरककादेउता आरु नाटिलरा' (1913 ई.), 'जुनुका' (1913 ई.), 'केहोंकलि'। केहोंकलि बेजबरुवा जी की मृत्य के पश्चात् प्रकाशित कहानी संकलन है।

नाटकः- 'लितिकाइ' (1901 ई.), 'नोमल' (1913 ई.), 'पाँचनि' (1913 ई.) और 'चिकरपति निकरपति' (1913 ई.), 'जयमती कुँवरी' (1915 ई.), 'चक्रधवज सिंह' (1915 ई.), 'केलियार' (1915 ई.) आदि।

उपन्यासः- 'पदुमकुँवरी' (1905 ई.)

आत्मकथाः- 'मोर जीवन सोंवरण'

जीवनी साहित्यः- शंकरदेव' (1911 ई.) 'श्रीशंकरदेव और माधवदेव' (1914 ई.)।

अन्य ग्रंथों की रचनायें - 'कामत कृतित्व लभिबर संकट' (1903 ई.), 'कृपाबर बरुवार काकतर टोपोला' (1904 ई.), 'कृपाबर बरुवार उभतनि' (1909 ई.), 'भारतबर्षर बुरंजी' (1909 ई.), 'डाऊरीया दीनानाथ बेजबरुवार जीवनचरित' (1909 ई.), 'बाखर', (1915 ई.), यह एक नीति एवं उपदेश मूलक ग्रन्थ है। 'भागवत कथा' (1915 ई), 'History of Vaishnavisim in India and Rasalila of Shankardev' (1915 ई.) आदि।

असमीया साहित्य के निर्माण में बेजबरुवा जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उपरोक्त उल्लेखित सभी ग्रन्थ कवि की मौलिक कृतियाँ हैं।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी के व्यक्तित्व का संक्षिपत परिचयः

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा आधुनिक असमीया साहित्य का निर्विवादित सर्वोच्च साहित्यिक व्यक्तित्व है, जिसे परवर्ती काल में **'साहित्य रथी'** आदि विशेषणों से विभूषित किया गया। बेजबरुवा जी आधुनिक असमीया साहित्य के नायक ही नहीं, अपितु समस्त आधुनिक असमीयाओं के बौद्धिक चेतना के कर्णधार भी रहे है। उन्होंने एक युग की सृष्टि की थी। सन् 1889 ई. के फरवरी महीने में असमीया पत्रिका जोनाकी का जन्म हुआ। इसी समय असमीया साहित्य जगत् में 'नवन्यास' (Romanticism) आन्दोलन का युग प्रारम्भ होने लगा। यह आन्दोलन पूरे अर्द्ध शताब्दी तक चलती रही। तथा इस समग्र युग में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी का साहित्यिक व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। सन् 1890 ई. से 1940 ई. तक के कालखण्ड को परवर्ती आलोचकों ने असमीया साहित्य के इतिहास में 'बेजबरुवा युग' की संज्ञा से भी अभिहित किया। उनके द्वारा रचित समस्त साहित्य में तत्कालीन युग एवं असमीया भाषा के विकसित रुप को स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। बेजबरुवा जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने साहित्य के विविध विधाओं जैसे- नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता, निबन्ध, आत्मकथा आदि में अपनी लेखनी चलायी है। साथ ही वे एक अच्छे सम्पादक भी रहे है।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और उनकी कविताः

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी का जन्म सन् 1864 ई. को हुआ। बेजबरुवा जी को असमीया साहित्य जगत में 'साहित्य रथी' के रुप में जाना जाता है। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी एक ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने असमीया जातीय जीवन को गति प्रदान करने के लिए अविराम एवं अथक प्रयास किया है। असमीया साहित्य में 'रोमान्टिक' शब्द कविता के एक विशेष काव्यधारा के लिए प्रयुक्त किया गया है। यह विशेषण असमीया साहित्य में अपने स्वरुप को विस्तार कर रहा था। यह स्पष्ट है कि जोनाकी पत्रिका के माध्यम से असमीया साहित्य में रोमान्टिक युग का सूत्रपात होता है। तत्कालीन युग की 'जोनाकी' और 'बाँही' पत्रिका में उन्होंने जितनी भी कविताओं की रचनी की है उन कविताओं को ही 'कदमकलि' काव्य संग्रह के नाम से प्रकाशित कराया गया। 'कदमकलि' बेजबरुवा जी द्वारा रचित कविताओं का प्रथम काव्य संकलन है।

'कदमकलि' (1913) बेजबरुवा जी द्वारा रचित ***'कविता हय जदि हउँक, नहय जदि नहउँक'*** [2] (अर्थात् कविता हुआ तो हुआ, नहीं तो नहीं) कहकर लिखी गई कविताओं का एक महत्वपूर्ण संकलन है। जिसमें *'सखीर प्रति', 'मईना', 'प्रियतमा', 'भ्रम', 'बाँही', 'चन्द्र' (गीत), 'कुलि' (गीत), 'आमार जन्मभूमि' (गीत), 'मोर देश' (गीत) 'बिहु', 'प्रेम', 'धनबर आरु रतनी' आदि कवितायें संकलित है।* उनके दूसरे महत्वपूर्ण काव्य संकलन *'पदुमकलि'* में *'असम संगीत', 'ब्रह्मपुत्र संगीत', 'संन्ध्या', 'प्रियतमा', 'कविता', 'बसन्त', 'जार, पदुम पातर पानी', 'विश्रृंखल',' बिरह', 'बरदैचिला', 'धूलि', 'बाँही', 'सागर संगीत'* आदि कवितायें संकलित हैं।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा असमीया रोमान्टिक काव्य आन्दोलन के पथ प्रदर्शक रहे हैं। चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी, जैसे अग्रज कवियों के साथ कदम के साथ कदम मिलाकर चलने वालों में से है। या यूँ कहे कि असमीया रोमान्टिक (रमन्यास) काव्योन्दोलन के त्रिमूर्ति कवियों में से एक हैं। बेजबरुवा जी के काव्यों का अनुशीलन करने के पश्चात् उनकी कविताओं को मुख्यतः पाँच भागों में विभाजित करके देखा जा सकता हैं। जैसे- *1. प्रेम-प्रीति परक कविता, 2. जातीय अस्मीता पर आधिरित कविता, 3. नीति एवं उपदेश प्रधान कविता, 4. व्यंग्य प्रधान कविता, 5. अध्यात्मिक भाव परक कविता* आदि।

रोमान्टिक कविता के भावों एवं आदर्शो को सम्मुख में रखकर कविता प्रणयन करने के कारण उनकी कविताओं को रोमान्टिक काव्य गुणों से सम्पन्न स्वीकार किया जाता है। रोमान्टिक कविताओं में विशेषकर कल्पना का अधिक महत्व देखा गया है। बेजबरुवा जी की कविताओं में कल्पना का तत्व प्रधान रुप से पाया जाता है। रोमान्टिक कवियों में चाहे वह अंग्रेज़ी हो, असमीया हो, या फिर हिन्दी के ही क्यों

न हो ? उसमे कल्पना है ही। *प्रेम, प्रकृति चित्रण, प्रकृति का आलम्बन, रहस्यवाद, अज्ञात प्रेम भावना, नारी चित्रण* आदि लक्षण तो रोमान्टिक कविताओं के प्रधान तत्वों में से हैं। रोमान्टिक काव्य के एक अन्यतम कर्णधार कवि होने के कारण उनकी कविताओं में कल्पना की प्रवणता देखी जा सकती है। साथ ही अंग्रेज़ी कवियों और उनकी कविताओं का स्पष्ट प्रभाव बेजबरुवा जी की कविताओं में प्रलक्षित होता है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि ***-"मोर मनर बहल पथारखन बाईरणर कविताइ कोमलाले, शैलीर कविताइ हाल बाले, कीट्छर कविताइ मैयाले आरु रबीन्द्रर कविताइ एने करिले जे तात लाही धानर कठीयाटौ कथाइ नाई, बिहमना, कोटकरा, पखरुवा विहलङनि आरु चोरातके आदि करि जिहरे गुटि हउँक पारिलेइ सियोइ भर-भर करि गजि मोक चा मोक चा कै उठिब ।"*** [3] (हिन्दी लिप्यान्तरण) बेजबरुवा की कविताओं में बाईन, शैली, कीट्स, रवींद्रनाथ टैगोर आदि महान् कवियों का स्पष्ट प्रभाव को देखा जा सकता है।

रोमान्टिक कवियों ने अपनी कविताओं में प्रकृति चित्रण को विशेष रुप से स्थान दिया है। कवियों प्रायः अपनी भावनाओं को उद्दीप्त करने के प्रकृति को माध्यम बनाया है। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की कविताओं में प्रकृति चित्रण का विस्तृत रुप नहीं मिलता लेकिन इसका अभाव भी लक्षित नहीं होता। उनकी अधिकतर कविताओं में प्रकृति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। एक तरह से कवि ने प्रकृति का *मानवीकरण* [4] करने का प्रयास किया है।

बेजबरुवा जी की कविताओं में प्रकृति एवं प्रेम का चित्रण:

बेजबरुवा जी का काव्य ग्रन्थ 'कदमकलि' में संकलित 'चम्पा', 'प्रियतमार सौन्दर्य', 'भ्रम' आदि प्रेम परक कविताओं को अध्ययन करने से पाश्चात्य कवियों शैली, कीट्स आदि का स्मरण हो आता है। उनकी कविताओं में रोमान्टिक कवियों की भाँति कभी सौन्दर्य का अतिशय विस्तार और संकुचित भाव का भी अनुभव होता है। जिस प्रेम को आत्मपरक कहाँ जाता है तथा जो प्रेम मनुष्य को देवता के आसन पर बिठाता है, उस प्रेम में लालसा का भाव नहीं रहता। बेजबरुवा की कविताओं में यहीं भाव बोध , इसी सौन्दर्य की अनुभूति होती है । यानि कि इनके द्वारा चित्रित प्रेम दैहिक न होकर अनुभूति का और इन्द्रिय बोध का विषय बन गया है। बेजबरुवा जी की प्रेम परक कविताओं में प्रकृति से लेकरके मानवीय प्रेम तक की झलक मिलती है। उनकी भ्रम (1913 ई.) कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति होती है तथा प्रेम का निछल प्रवाह को भी देखा जा सकता है। इस कविता में प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को अनुभूव किया जा सकता है। एक उदाहरण दृष्टव्य हैं-

कोने कय सेइटि हरिणा-पोवालि
इमान चेतना नाइ।
बनर सौन्दर्य रुप धरि आहि
देउ दि दूबरि खाय। [5] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

बेजबरुवा जी द्वारा रचित मालती, प्रियतमा, प्रियतमार सौन्दर्य, तोमाकेई भाल पाउँ, मइना, चुमा, मरमर सखी आदि कवितायें प्रेम पर आधिरित कविता है। कवि ने जिस प्रेम को अपनी कविताओं में दर्शाया है वह प्रेम पाश्चात्य प्रेम से काफी पार्थक्य रखता है। पाश्चात्य प्रेम का आदर्श और भारतीय प्रेम दर्शन में काफी अन्तर है। पाश्चात्य प्रेम के स्परुप में प्रतिदान का भाव अधिक है अर्थात् प्रेम का दोनों ओर से होना स्वाभाविक समझा जाता है। लेकिन भारतीय प्रेम दर्शन में त्याग की भावना अधिक होती है। यह बात सही है कि *तत्कालीन समय में भारतीय रोमान्टिक काव्य में पाश्चात्य काव्य शैली (*method, technique*) का प्रभाव परिलक्षित होता है, लेकिन भारतीय दर्शन के आदर्श का प्रभाव असमीया रोमान्टिक काव्य में देखने को मिलता है।*

बेजबरुवा जी एक मंजे हुये प्रतिभावान कवि थे। उनकी कविताओं में अभिव्यक्ति प्रेम की गम्भीरता एवं भाव प्रवणता भी दिखाई पड़ता है। 'प्रियतमार सौन्दर्य' कविता में एक अद्भूत सौन्दर्य की अनुभूति है।

कोमल अन्तर प्रेममय मन
कोमल जुर हृदय
दिया जय दिने राति मोर मन
अचल अटल रय। [6] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

बेजबरुवा जी द्वारा रचित 'धनवर और रतनी' एक मनोहारी एवं मर्मस्पर्शी प्रेम परक कविता है। इस कविता को आधुनिक बेलाड (ballad) भी कहां जाता है। यह कविता लोककथा पर आधारित है इसमें प्रेमी युगल के हृदय की मर्मस्पर्शी उद्गार अभिव्यक्त हुआ है। जैसे-

उजाये आहिले माटीर रतनी
बुकुरे माधुरी लै,
भटीयाइ गले ऐ शाहटो सामरि
मौलै खोलटो थै। [7] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

'धनबर और रतनी' दोनों प्रेमी युगल है की । दोनों की आयु सोलह वर्ष है इनके माध्यम से कवि ने निचछल प्रेम का वर्णन करने का प्रयास किया है।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी के द्वारा रचित प्रेम परक कविताओं की संख्या काफी है उनकी 'प्रियतमा' कविता असमीया रोमान्टिक काव्य जगत को प्रेम के स्वरुप को प्रतिष्ठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। इस कविता में प्रियतमा के देह की लावण्यता का वर्णन इन्द्रियग्राह्य ही प्रतीत होती है। लेकिन उसमें कवि का दृष्टिकोण वासना युक्त नहीं है। कवि का प्रेम वर्णन शारीरिक या दैहिक न होकर अनुभूति जन्य है। कवि कहते है कि-

आरु आछे शुनि किन्तु नाइ देखा
रंगा गोलापर मणि,
आकों देखुवालो प्रियतमा-उँठ
हेंगुली पोवाल-मणि। [8] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

कवि अपनी प्रिया से दैहिक प्रेम की आकांक्षा नही करता । बल्कि उसे एक ऐसे प्रेम की अभिलाषा है जो चिरकाल तक उस प्रेम का राग न छूटे । एक ऐसे विशिष्ट प्रेम की आशा है जिसमे वासना लेख मात्र भी न हो। बेजबरुवा जी की काव्य प्रतिभा रोमान्टिक भावना से ओत-प्रोत है। रोमान्टिक कविता अधिकतर नीजि अनुभूतियों से जुड़ा होता है लेकिन फिर भी ऐसी कविताओं में हमें वासना की कामना लेश मात्र भी नहीं मिलता। बेजबरुवा जी की कविताओं में प्रकृति का चित्रण एवं सुमुधुर भाव चित्रमयी भाषा में भी देखने को मिलता है। कवि ने अपनी मालती कविता में प्रकृति के सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया है। प्रातः कालीन सूर्य उदित होकर कैसे नवीन आशा का संचार करता है इसका सुन्दर वर्णन मालती कविता में मिलता है।

रोमान्टिक कवि बेजबरुवा जी ने अपनी कविताओं में प्रकृति के विविध उपादानों का भी चित्रण किया है। वसंत ऋतु का वर्णन, संध्या काल का वर्णन, आदि बहुत ही मार्मिक बन पड़ा है। कवि ने अपनी 'बसंत' कविता में बसंत ऋतु का वर्णन करते हुये कहते है कि –

मालती फुलिल, सेउती उठिल
केतेकी गामुरि दिले,
सुरीया कुलिये गोल कपाइ गाइ
बननिर बातरि दिले। [9] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

रोमान्टिक कवियों ने विशेष रुप से अपनी कविताओं में प्रेम-प्रकृति आदि को अपनी कविताओं का आधार बनाया है। प्रकृति चित्रण-प्रेम उनकी कविताओं की प्रधान

विशेषताओं में से एक है। प्रकृति का आलम्बन और उद्दीपन के रुप में बेदबरुवा जी ने चित्रण करने का प्रयास किया है। प्रकृति मनुष्यों के जीवन की चहचरी होती है। कवि ने 'संध्या' कविता में प्रकृति के मनोरम दृश्यों को चित्रित किया हैः-

पिन्धि कला साज सन्ध्या आइ
लाहे लाहे चरण चलाई
रंगमने हल उपगता
जेने सजाइया निज अंग
नवबधु करि भाव-भंग
पतिपाशे याय लज्जावन्वनिता।। [10] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

उक्त कविता में कवि ने संध्या बेला के आगमन का सुन्दर वर्णन किया है। संध्या बेला में किस प्रकार जुगनुओं का तिम-तिम कर पंक्ति बद्ध होकर जलने को कवि ने सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है। वे लिखते है कि –

जोनाकी परुवा सातरी
ज्वलिछे डिङित शारी शारी
जिलिकनि धरय चकुत
मोहन ध्रुबर मंडलत
सप्तऋषि ज्वले उपरत
देखि मन याक तृप्तियक्त। [11] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

बेजबरुवा जी प्रकृति के सौन्दर्य का पान कर तृप्ति का अनुभव करना चाहता है। कवि की अन्य कविताओं में जैसे- *'धूलि'*, *''बरदैशिला'*, *'बाँही'* आदि कविताओं में भी प्रकृति का मनोरम चित्रण हुआ हैं।

बेजबरुवा जी की कविताओं में जातीय अस्मिता का चित्रण:

प्रकृति, प्रेम आदि के चित्रण के साथ-साथ कवि ने जातीयता भावबोध पर आधारित कविता की भी रचना की है। रोमान्टिक काव्यधारा के अन्तरगत कवि ने जातीय अस्मिता से सम्बन्धित काव्यों का भी प्रणयन किया है। देश की गुलामी को कवि ने भोगा एवं देखा। इसलिए उसका वर्णन उनकी कविताओं में होना स्वाभाविक ही है। बेजबरुवा जी के द्वारा रचित कवितायें जैसे- *'बीण-बरागी'*, *'आमार जन्मभूमि'*, *'असम संगीत'*, *'बिँहु'*, *'मोर देश'* आदि में जातीय भावबोध मुखरित हुआ है। स्वदेश प्रेम बेजबरुवा जी की कविताओं का प्रधान लक्षण है। वे एक ऐसे कवि है जिसमें जातीयता का भाव कुट-कुट कर भरा हुआ दिखाई देता है। 19 वीं और 20 वीं शताब्दी के मध्य समग्र भारत के साथ-साथ असम प्रांत भी अंग्रेज़ी सत्ता के अधीन था । इस अधीनता से सारे भारतवासियों में मुक्ति की आकांक्ष अदम्य थी। कवि ने जातीय भाव बोध की कविताओं की रचना कर देशवासियों में उर्जा का संचार करने का प्रयास किया। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने आमार जन्मभूमि कविता में असम की तत्कालीन छवि को प्रकाशित किया है। बेजबरुवा जी का स्वदेश प्रेम आन्तरिक अनुभूति पर प्रतिष्ठत था। वे अपनी कविता में जन्मभूमि के प्रति प्रेम और उसकी अनुपमता को वखान करते हुये लिखते है कि-

हेरा आमार जन्मभूमि !
हेरा आमार जन्मभूमि !
ऐने देश कतो नोपोवा हेरा तुमि
हेरा आमार जन्मभूमि !
x x x x
कत एने धानर पथार, तामोल-पानर बारी?
भलुका मकाल आदि आँछे बाँहर धारी।
लुइतर दरे बरनै कत आछे कोवाँ?
घूरि आहा बसुमती तथापि नोपोवा।
हेरा आमार जन्मभूमि ! [12] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

'बीन-बरागी' भी बेजबरुवा जी द्वारा रचित एक उत्कृष्ट देश-प्रेम पर आधारित कविता है। बरागी हाथ मे बीणा लिये हुये देश की सुख-दुःख की बातों को सम्वाद शैली के द्वारा समाज में प्रचारित करता है। रोमान्टिक युग की कविता बीण-बरागी के द्वारा कवि ने देश की तत्कालीन विषम परिस्थितियों को चित्रित किया है। कवि बरागी से कहते है कि तम दुःख का बात करते हो पर मैं समझ नहीं पाता हूँ।

कि दुखर कथा
कि शोकर बारता
कि कछै नुबुजों मइ । [13] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

'बीण-बरागी' कविता में सीता, नल-दमयन्ती, द्रौपदी, जयमति, मरान आक्रमण, मणिराम, पियाली आदि की कहानियों को कहने के लिए बरागी को मना करता हैं-

मणिराम पियलिर
मरण बातरि
यदि तोर बीणे वाय
मानाकर ताक
बरागी ककाइ ऐ,
शोक मोर उथलाय [14] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

कवि ने बरागी से विषाद की कहानियों को कहने के लिए मना करते हुये कहते है कि–

विषाद बातरि
कतनो शुनावि
मनर तरणि नाइ
काबौकै मातिछो
बरागी ककाइ ऐ,
बीणे जेन निबिनाय। [15] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

कवि ने बरागी से समृद्धि, आनन्द की कहानी सुनना चाहता है। कवि शांति का गीत गाना चाहता है। वे देश के गौरव-सौर्य-वीरता की कहानियों को गाकर जन-जन तक पहुँचाना चाहता है। 'बीण-बरागी' कविता में देश-प्रेम, जातीय भाव-बोध एवं अस्मिता को कविता के प्रारम्भ से अंत तक देखन को मिलता। यह उनके द्वारा लिखित देश-प्रेम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

कवि के मृत्यु उपरान्त प्रकाशित काव्य ग्रंथ में संकलित *'असम संगीत'* में भी स्वदेश प्रेम को प्रकट किया है। बेजबरुवा जी लिखते है कि –

आमि असमीया नहुउ दुखीया
किहर दुखीया हम
सकलो आछिल, सकलो आछे,
नुबुजों नलउँ गम।
शंकरे दिले विशुद्ध धरम
लाचिते बाहुत बल,
सती जयमती सतीत्व तेजेरे
असमी आइ प्रबल।
बाजक दबा, बाजक शंख
बाजक मृदं खोल,
असम आकौ उन्नति-पथत
जय आइ असम बोल। [16] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

कवि ने उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि हमारे पास सब कुछ है। अतीत हमारा गौरवशाली रहा है, हम पनः अपने देश को विदेशियों के हाथों से नकाल कर उन्नत्ति के पथ की ओर ले जा सकते है। उपर्युक्त कविताओं में

कवि ने अपनी जातीय अस्मिता की भावना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया हैं।

उपसंहार:

उपर्युक्त विशलेषण के आधार पर लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी कि कविताओं के सन्दर्भ में कहाँ जा सकता है कि उनकी कविताओं में रोमान्टिक भावना को स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है। प्रेम चित्रण, प्रकृति चित्रण, स्वदेश के वर्णन आदि उनके कविताओं की प्रमुख विशेषता रही हैं। लक्ष्मीनाथ जी ने अपनी कविताओं मे रोमान्टिक काव्य गुणों को कुशलता पूर्वक अभिव्यक्त किया है। अतः कह सकते है कि लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जी एक सफल कवि है। उनकी काव्य प्रतिभा अनुपम एवं अनुठा है। उनकी देश भक्ति परक रचनाओं में ओज गुण है जो पाठक में उर्जा का संचार करता है। कवि ने अपनी कविताओं में प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत प्रकृति के विविध उपादानों का सहयोग लिया है। रोमान्टिक युग को विकसित करने में इस युग की पत्रिकाओं जोनाकी और बाँही का भी विशेष योगदान रहा है। प्रकृति के प्रति अनुराग रोमान्टिक साहित्य की मुख्य विशेषता रही है। प्रकृति के प्रति आकर्षण, प्रकृति के सौन्दर्य में तन्मयता का भाव, प्रकृति की उपासना, प्रकृति के साथ मनुष्य का सम्बन्ध आदि की महानुभूति दृष्टिकोण इस युग के काव्य में विद्यमान रहा हैं। प्रेम निवेदन करना रोमान्टिक साहित्य का प्राथमिक लक्षण रहा है। अंग्रेजी साहित्य के रोमान्टिस्जिम [17] को भारतीय साहित्य में सबसे पहले बांग्ला साहित्य में देखा गया, तत्पश्चात असमीया और फिर हिन्दी में देखा गया।

पाद टिप्पणियाँ ;थ्ववजदवजमद्धरू

1. *सन् 1889 ई. में प्रकाशित असमीया पत्रिका है। जो छः वर्षों के प्रकाशन के बाद बन्ध हो गया। फिर सन् 1901 ई. में पुनः प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के प्रथम सम्पादक चन्द्रकुमार अगरवाला थे। जिसे असमीया रोमान्टिक काव्य धारा के प्रवर्तक होने का श्रेय जाता है।*
2. *भूमिका (कदमकलि से), बेजबरुवा ग्रन्थावली, (तृतीय खण्ड), सम्पादक- नगेन शइकीया पृष्ठ संख्या- 3।*
3. *मोर जीवनर सोंवरण (आत्मकथा के अष्टम अध्याय से), बेजबरुवा ग्रन्थावली (प्रथम खण्ड), सम्पादक -नगेन शइकीया, पृष्ठ संख्या- 56.*
4. *जहाँ किसी वस्तु या भाव में चेतना का आरोप किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। मानवीकरण में प्रकृति के द्वारा मानवीय क्रिया को आरोप करते हुये दिखाया जाता है। मानवीकरण छायावादी काव्य (रोमान्टिक) की प्रमुख विशेषता है। छायावादी काव्य में मानवीकरण के रुप में प्रकृति-चित्रण की प्रमुखता है, उदाहरण-*

   धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से / आ वसन्त रजनी / तारकमय नव वेणी बन्धन / शीशफूल कर शशि का नूतन। / रश्मि-वलय सित घन-अवगुंठन / मुक्ताहल अभिराम विदा दे/ चितवन से अपनी।।

   कवियत्री- महादेवी वर्मा (यामा)

   उद्धृत- रस दोष, छंद, अलंकार निरुपण, लेखक- डॉ. मनहोरगोपाल मागध, श्री राकेश, प्रकाशक केन्द्र- रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ- 20, पृष्ठ- 128-129.
5. *भ्रम (कदमकलि से), बेजहरुवा ग्रन्थावली, तृतीय खण्ड सम्पादक -नगेन शइकीया, , पृष्ठ संख्या- 4*
6. *प्रियतमार सौन्दर्य (कदमकलि से) वहीं, पृष्ठ संख्या-8.*
7. *धनबर आरु रतनी, (कदमकलि से) वहीं, पृष्ठ संख्या-28.*
8. *प्रियतमा, (कदमकलि से), बेजबरुवा ग्रन्थावली, तृतीय खण्ड सम्पादक - नगेन शइकीया पृष्ठ संख्या-7.*
9. *वसन्त (पदुमकलि से), वहीं, पृष्ठ संख्या – 46.*
10. *संध्या (पदुमकलि से), वहीं, पृष्ठ संख्या – 44.*
11. *वहीं, पृष्ठ संख्या – 44.*
12. *आमार जन्मभूमि (कदमकलि से), पृष्ठ संख्या – 11.*
13. *बीण-बरागी (कदमकलि से), पृष्ठ संख्या – 26.*
14. *वही, पृष्ठ संख्या – 27.*
15. *वहीं, पृष्ठ संख्या – 27.*
16. *असम संगीत (पदुमकलि से), पृष्ठ संख्या – 41.*
17. Romanticism (also the Romantic era or the Romantic period) was an artistic literary, and intellectual movement that originated in Europe towards the end of the 18 th century and in the most areas was at its peak in approximate period from 1800 to 1850. It was partly a reaction to the Industrial Revolution, the aristocratic social and political norms of the Age of Enlightenment, and the scientific rationalization of nature. Romanticism- Wikipedia, the free encyclopedia online.

सन्दर्भ ग्रन्थ:

शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, लखेक, *असमीया साहित्यर समाक्षात्मक इतिवृति*,)नवम संस्करण 2001(, प्रकाशक- प्रतिमा देवी, रिहाबारी, गुवाहाटी- 8, असम।

बरा, डॉ. हेम, लेखक, *रमन्यासवादः असमीया कविता आरु कुरिजन प्रधान कवि*, प्रथम संस्करण 2013(, प्रकाशक- श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी-01,असम।

बरुवा, हेमचन्द्र, लेखक, *हेमकोष*,)प्रथम संस्करण 1900, और चोदहवीं संस्करण 2011(प्रकाशक- दिवानन्दा बरुवा, हेमकोश प्रकाशन, एम. आर. दीवान पथ, चान्दमारी, गुवाहाटी- 03, असम।

शइकीया, नगेन, सम्पादक, बेजहरुवा *ग्रन्थावली, (प्रथम और तृतीय खण्ड)*, संस्करण-2010, प्रकाशक- बनलता, जसवन्त रोड, पानबजार, गौहाटी- 01, असम।

पत्रिका:

1. Samikshayan, An Assasmese monthly News Magazine, 2014, 5(5).
2. Gariyoshi, A Monthly Assasmese Magazine, Sahitya Prakash, Guwahati, 2015; XXII(11):3.
3. Gariyoshi, A Monthly Assasmese Magazine, Sahitya Prakash, Guwahati, 2014; XXII(2):3.
4. Gariyoshi, A Monthly Assasmese Magazine, Sahitya Prakash, Guwahati- 2014; XXII(2):3.